पेसा कानून के तहत गाँव विकास नियोजन

विलेज प्रोफाइल

समोता का ओड़ा

पंचायत- कोलखंडा खास

तहसील- दोवड़ा

जिला- डूंगरपुर, राजस्थान

पीस

समोता का ओड़ा गाँव का परिचय

समोता का ओड़ा गाँव, ग्राम पंचायत-कोलखंडा खास का एक राजस्व गाँव है । यह गाँव डूंगरपुर जिला मुख्यालय से 43 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में स्थित है । समोता का ओड़ा गाँव के सबसे नजदीकी गाँव कुबेरा, कोलखंडा पाल, रामा, समोता, जोगीवाड़ा, कोलखंडा खास, हडमतिया और घटियाघरा है ।

गाँव में करीब 150 घर है जिनकी आबादी करीब 750 है। गाँव में सारे घर एस.टी. जाति के है जिनकी उपजातियां परमार, कलासुआ और ननोमा है । ये सभी लोग 4-5 घरों के समूह में खेतों के पास घर बना कर रहते है । गाँव के लोग खेती में मक्का, गेहूँ, उड़द और चना उगाते है । गाँव में मनरेगा का काम मिल जाता है लेकिन मजदूरी पूरी नहीं मिलती है । गाँव के लगभग सभी घरों में बिजली की सुविधा है लेकिन बिजली विभाग के मनमाने ढंग से बिल थमा देने से परेशान भी है । अक्सर रात को बिजली कट जाती है जिस कारण रात अँधेरे में गुजारनी पड़ती है । कृषि की अधिकतर जमीन उबड़-खाबड़ और पथरीली है, खेती की समतल जमीन नहीं के बराबर है । खेत असिंचित है क्योंकि सिंचाई के लिए पानी प्रर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है । उसमे केवल बरसात के मौसम में ही फसल होती है, जैसे - मक्का, उड़द, मूंग, और अरहर । जिनके पास बोरवेल की सुविधा है वे लोग खाने के लिए गेहूँ भी उगाते है । समोता का ओड़ा गाँव तक पहुँचने के लिए दो पक्की सड़के है एक सड़क गाँव को दो हिस्सों में बाँटती है, इसके अलावा गाँव के भीतर एक और पक्की डामरीकृत सड़क है । गाँव के छोटे छोटे फलों में जाने के लिए 5 सी.सी. सड़के और 1 कच्ची सड़क है, और एक जर्जर बस स्टैंड भी है । गाँव का कुल रकबा 186 हेक्टेयर है जिसमे गाँव की कृषि जमीन, बेनामी जमीन, जंगल और चारागाह की जमीन शामिल है । गाँव में जंगल की जमीन उत्तर दिशा में है जिसपर वन विभाग ने कब्ज़ा कर रखा है, गाँव वालों कों जंगल से किसी भी प्रकार का लघुवन उपज एकत्र करने पर वन विभाग ने रोक लगा रखी है । बिलानाम और चारागाह जमीन भी वन विभाग के कब्जे में है ।

आवागमन की स्थिति

डूंगरपुर जिला मुख्यालय से गाँव तक जाने के लिए ज्यादा सफ़र प्राइवेट बस से तय करना पड़ता है उसके बाद गाँव में जीप और ऑटो से जा सकते है । गाँव में सड़कों की संख्या कम है, और जो है उनकी भी हालत अच्छी नहीं है । समोता का ओड़ा गाँव में दो पक्की डामरीकृत सड़के है, लेकिन 1 सड़क टूट गयी है । इसके अलावा 5 छोटी सी.सी. सड़के है और गाँव के भीतर के कुछ घरों तक जाने के लिए 1 कच्ची सड़क है। गाँव के मुख्य सड़क पर एक बस स्टैंड है जहाँ से प्राइवेट बस, ऑटो और जीप दूसरे गाँवो में जाने के लिए मिल जाते है । बस स्टैंड पर कोई भवन नहीं है न तो पीने के पानी की व्यवस्था है न ही शौचालय है । गाँव की सी.सी. सड़के टूट गयी है और कच्ची सड़क भी बहुत सकरी है इन पर केवल नीजी वाहन जैसे मोटर साइकिल या पैदल जाया जा सकता है । गाँव के लोग खरीदारी के लिए मुख्य बाजार पुनाली 9 किमी और डूंगरपुर 43 किमी दूर जाते है, जहां पर सभी प्रकार की घरेलू खरीदारी के अलावा शादी-ब्याह और त्यौहारों की खरीदारी की जाती है।

शिक्षा व स्वास्थय

गाँव में दो प्राथमिक विद्यालय है जिसमे इस शैक्षणिक वर्ष (2018) में 100 बच्चों का नामांकन हुआ है दोनों विद्यालयों 4 अध्यापक नियुक्त है । दोनों ही स्कूलों की छत से पानी टपकता है, अध्यापकों की कमी है, कक्षा-कक्ष कम है, खेल के मैदान की बाउन्ड्री टूटी हुई है तथा अलग-अलग शौचालय भी नहीं

बने है और शौचालयों में पानी की व्यवस्था नहीं है । बच्चों के पीने के लिए साफ पानी हेतु आर.ओ. नहीं लगा है गाँव में पानी में फ्लोराइड की मात्रा बहुत ही ज्यादा है । सड़कों के अभाव में बच्चों को स्कूल जाने में काफी समस्या हो जाती है । स्नातक स्तर की शिक्षा लेने के लिए बच्चों को 43 किमी दूर डूंगरपुर कॉलेज जाना पड़ता है, ज्यादातर बच्चे वही पर किराये के कमरे या हॉस्टल में रहते है । बहुत कम बच्चे 12वीं कक्षा के बाद आगे पढ़ाई करते है । गाँव में 1 आंगनवाड़ी है, लेकिन आंगनवाड़ी भवन कमजोर हो गया है वहाँ पीने के पानी और शौचालय की व्यवस्था नहीं है गाँव के बच्चे उसमे कम ही जाते है क्योंकि ज्यादातर बच्चों की लिए यह बहुत दूर है । गाँव में उपस्वास्थ्य केन्द्र नहीं है । नजदीकी उप-स्वास्थ्य केंद्र समोता में है । नजदीकी सरकारी हॉस्पिटल दामड़ी में है और बड़ा सरकारी हॉस्पिटल डूंगरपुर में 43 किमी दूर है । बीमार लोगों के लिए 108 और एम्बुलेन्स की सुविधा सूचना देने पर मिल जाती है । कई बार गम्भीर मरीजों को उदयपुर के महाराणा भोपाल चिकित्सालय में रेफर किया जाता है । पालतू जानवरों के इलाज के लिए पशु अस्पताल पुनाली में 8 किमी दूर है । पशु के बीमार होने पर डॉक्टर कों घर ही बुलाया जाता है क्योंकि पशु को ले जाने में खर्चा अधिक आता है ।

सरकारी योजनाएँ

गाँव के लगभग सभी घरों में बिजली है। गाँव में 85 परिवारों को विभिन्न आवास योजनाओं के अंतर्गत लाभ मिला है, जिसमें से 25 प्रधानमंत्री आवास और 60 मुख्यमंत्री आवास योजना के लाभार्थी है । गाँव में 44 पेंशनधारी है, जिनमें 18 महिलायें तथा 22 पुरूषों को वृद्धावस्था पेंशन, 4 महिलाओं को विधवा पेंशन मिलती है । गाँव में लगभग 90 घरों में उज्ज्वला गैस कनेक्शन मिल गया है ।

कृषि और रोजगार की स्थिति

गाँव में कृषि की जमीन उबड़-खाबड़ और पथरीली जमीन भी है, कही कही पर समतल जमीन है लेकिन सारे खेत असिंचित है क्योंकि सिंचाई के लिए पानी प्रर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है । उसमे केवल बरसात के मौसम में ही फसल होती है जैसे - मक्का, उड़द, मूंग, और अरहर । जिनके पास बोरवेल की सुविधा है वे लोग खाने के लिए गेहूँ भी उगाते है । जिनके पास समतल जमीन है वो छह - सात महीने खाने और जिनके पास उबड़-खाबड़, पथरीली जमीन है वो चार-पांच महीने खाने भर का अनाज उगा लेते है । फिर बाजार से या राशन की दुकान से खरीदकर लाना पड़ता है । राशन की दुकान 4 किमी दूर जोगीवाड़ा गाँव में है ।

गाँव में रोजगार की स्थिति ख़राब है, रोजगार के नाम पर मनरेगा का काम गाँव में चलता है लेकिन उसमे भी गाँव की ज्यादातर महिलायें ही जाती है क्योंकि पुरुष पूरे परिवार के साथ ही गाँव से शहर की ओर मजदूरी और काम की तलाश में पलायन कर गये है । मनरेगा में भी काम की पूरी नपती नहीं होती है और ना ही काम का पूरा दाम मिलता है । कुछ लोग कड़िया मजदूरी करने के लिए डूंगरपुर शहर में आते है । कई बार शहर में काम ना मिलने पर खाली हाथ घर जाना पड़ता है । गाँव के युवा और पढ़े-लिखे पुरुष अपने परिवार के साथ गुजरात में अहमदाबाद, मोडासा, हिम्मतनगर बच्चों की अच्छी शिक्षा और बेहतर जीवन की उम्मीद में पलायन कर जाते है, जहां वे फेक्ट्रीयों और खेतों में काम करते है।

सिंचाई के पानी की स्थिति

गाँव में पानी की स्थिति काफी विकट है, सिंचाई के पानी के लिए गाँव में कोई नदी, तालाब, नहर नहीं है । जंगल की ओर से चार नाले बह कर आते है जो बरसात में चलते है । एक बड़े नाले पर एक एनिकट

बना है उसमे से ही सिंचाई और पशुओ के लिए पानी लिया जाता है । गाँव में 15 कुएं है उसमे भी 6 कुएं सूखे है । 9 कुओं में साल भर पानी रहता है जो नालों के पास के खेतों में है, लेकिन गर्मी में सिर्फ पशुओं को पिलाने लायक ही पानी बच पाता है । एनिकट भी पुराना है उसमें दरारे पड़ गयी है जिससे पानी रिस कर निकल जाता है, और इसकी ऊंचाई भी कम है इस कारण सिचाई के लिए पानी बारिश के बाद कम ही मिल पाता है । पानी की कमी को पूरा करने के लिए लोगो ने बोरवेल भी खुदवाये है, गर्मी में पानी का जल स्तर 250 फीट नीचे चला जाता है और पानी की कमी हो जाती है ।

समोता का ओड़ा गाँव की चिन्हित समस्याओं का विवरण

प्राकृतिक संसाधन

गांव में जंगल, बिलानाम जमीन, पहाड़ और चारागाह सभी वन विभाग के कब्जे में है । आज से 40-50 साल पहले सभी छोटी पहाड़ियाँ हरी-भरी थी और उनपर घास एवं सागवान, गोंद, आवला, महुआ के पेड़ थे, जंगल से चारा, लकड़ी, ढाक के पत्ते जैसी लघुवन उपज होती थी। जिसे गांव के लोग अपने उपयोग में लेते थे, लेकिन अब जंगल बर्बाद हो गया है, सागवान, महुआ के पेड़ खत्म हो गये है । अभी जंगल में बबूल के कटीले पेड़ मात्र बचे है । जिन्हें गाँव के लोग किसी काम में नहीं ले सकते है । यदि थोड़ा बहुत कुछ लघुवन उपज होती भी है उसे वन विभाग से परमिशन के बाद ही ले सकते है । वन विभाग ने गाँव के लोगो की जंगल में प्रवेश करने पर रोक लगा दी है यदि कोई अनाधिकृत प्रवेश करने और जंगल का उपयोग करने की कोशिश करता है तो उस पर जुर्माना किया जाता है । चारागाह भूमि पर बारिश में घास उगती है जिसे वन विभाग से अनुमति लेकर तथा एक निश्चित राशि जमा करने के बाद ही चारा काटते है।

जल व भूमि प्रबंधन की कमी

गाँव में पानी की स्थिति काफी विकट है, सिंचाई के पानी के लिए गाँव में कोई नदी, तालाब, नहर नहीं है । जंगल की ओर से बरसात में जो चार नाले बहते है उसमे से एक बड़े नाले पर एक एनिकट बना है । एनिकट भी पुराना है उसमें दरारे पड़ गयी है जिससे पानी रिस कर निकल जाता है, और इसकी ऊंचाई भी कम है इस कारण सिचाई के लिए पानी बारिश के बाद कम ही मिल पाता है । गाँव में 15 कुएं है जिसमे से मात्र 9 कुओं में साल भर पानी रहता है जो नालों के पास के खेतों में है, उनसे सिंचाई का पानी लिया जाता है । लेकिन गर्मी में सिर्फ पशुओं को पिलाने लायक ही बच पाता है । पानी की कमी को पूरा करने के लिए लोगो ने बोरवेल भी खुदवाये है, गर्मी में पानी का जल स्तर 250 फीट नीचे चला जाता है और पानी की कमी हो जाती है । गाँव के सभी जल-स्रोत गर्मी में नकारा साबित हो जाते है । गाँव में 20 हैंडपंप है । 9 हैंडपंप पाइप ख़राब होने, कम गहरे होने के कारण बंद पड़े है । बचे चालू 11 हैंडपंप भी दूर दूर है, गर्मी में पीने के पानी के लिए गाँव की महिलाओं और बच्चों को बड़ी दूरी से पैदल घड़े भर कर लाना पड़ता है । पीने के शुद्ध पानी के लिए आर.ओ. नहीं लगा है । गाँव में पीने का पानी फ्लोराइड और आयरन युक्त है जिससे लोगों को फ्लोरोसिस बीमारी हो रही है ।

गाँव में पानी का स्तर 250 फुट गहराई में चला गया है । वर्षाजल को संरक्षित करने के विषय में गाँव के लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया है न ही पंचायत और सरकार इस समस्या की ओर ध्यान दे रही है ।

अगर यही उदासीनता आगे भविष्य में भी बनी रही तो आने वाले कुछ सालों में ही कोई भी जल-स्रोत पानी उपलब्ध नहीं करा पायेगा ।

गाँव में ज्यादातर लोग कई पीढियों से गाँव में रह रहे है लेकिन उनको उनकी कब्जे की जमीन का पट्टा या अधिकार पत्र नहीं मिला है इसका मुख्य कारण पट्टे के लिए आवेदान करने और उसको जमा कहाँ करना है उसकी जानकारी की अनभिज्ञता है । गाँव की जंगल और चारागाह की जमीन पर वन विभाग ने कब्ज़ा कर लिया है । गाँव के लोगो ने जंगल के सामुदायिक दावा पट्टा फाइल नहीं लगाई है जिसका बड़ा कारण गाँव के लोग अब जंगल को अपने गाँव का हिस्सा नहीं मानते है । गाँव की आबादी बढ़ने से भी खेती की जोत भी कम हो रही है । खेत की जोत भी उबड़-खाबड़ और पथरीली है, उन्हें समतलीकरण की आवश्यकता है । खेतों में सिंचाई के पानी का संकट रहता है जिस कारण लोग खाने के लिए अनाज का उत्पादन पूरी तरह से बारिश पर ही निर्भर है ।

आवागमन की समस्या

गाँव में दो पक्की डामरीकृत सड़के है, लेकिन 1 सड़क टूट गयी है । इसके अलावा 5 छोटी सी.सी. सड़के है, सही देखभाल और मरम्मत के अभाव में इनमे गड्डे पड़ गये है, इनके साथ बनी नालिया टूट गयी है और सफाई के अभाव में कीचड़ भर गया है और गन्दा पानी सड़कों पर फ़ैल जाता है । गाँव के भीतर के कुछ घरों तक जाने के लिए 1 कच्ची सड़क है। कच्ची सड़क भी बहुत सकरी है इन पर केवल नीजी वाहन जैसे मोटर साइकिल या पैदल जाया जा सकता है । बारिश के मौसम में तो हालत बहुत ख़राब हो जाती है पैदल चलना भी दूभर हो जाता है । गाँव के मुख्य सड़क पर एक बस स्टैंड है जहाँ से प्राइवेट बस, ऑटो और जीप दूसरे गाँवो में जाने के लिए मिल जाते है । बस स्टैंड पर कोई भवन नहीं है न तो पीने के पानी की व्यवस्था है न ही शौचालय है । सड़क बनाते समय सामग्री की गुणवत्ता की जाँच नहीं की गयी जिस कारण सड़के भी बहुत जल्दी टूट गयी है ।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति

गाँव में दो प्राथमिक विद्यालय है जिसमे इस शैक्षणिक वर्ष (2018) में 100 बच्चों का नामांकन हुआ है जिनके लिए 4 अध्यापक नियुक्त है । दोनों ही स्कूलों की छत से पानी टपकता है और फर्श भी टूट गयी है, अध्यापकों की कमी है, कक्षा-कक्ष कम है, कक्षाओ में बैठने के लिए दरी-पट्टी भी नहीं है । दो कक्षाओ कों एक साथ बैठाकर पढ़ाया जाता है इससे शिक्षा की गुणवत्ता और ज्ञान अर्जन की क्षमता भी प्रभावित होती है । खेल के मैदान की बाउन्ड्री टूटी हुई है तथा अलग-अलग शौचालय भी नहीं बने है और शौचालयों में पानी की व्यवस्था नहीं है । बच्चों के पीने के लिए साफ पानी हेतु आर.ओ. नहीं लगा है गाँव में पानी में फ्लोराइड की मात्रा बहुत ही ज्यादा है । सड़कों के अभाव में बच्चों को स्कूल जाने में काफी समस्या हो जाती है । स्नातक स्तर की शिक्षा लेने के लिए बच्चों को 43 किमी दूर डूंगरपुर कॉलेज जाना पड़ता है, ज्यादातर बच्चे वही पर किराये के कमरे या हॉस्टल में रहते है । बहुत कम बच्चे 12वीं कक्षा के बाद आगे पढ़ाई करते है ।

गाँव में 1 आंगनवाड़ी है, लेकिन आंगनवाड़ी भवन कमजोर हो गया है वहाँ पीने के पानी और शौचालय की व्यवस्था नहीं है गाँव के बच्चे उसमे कम ही जाते है क्योंकि ज्यादातर बच्चों की लिए यह बहुत दूर है । गाँव में उपस्वास्थ्य केन्द्र नहीं है । नजदीकी उप-स्वास्थ्य केंद्र समोता में है । नजदीकी सरकारी हॉस्पिटल दामड़ी में है और बड़ा सरकारी हॉस्पिटल डूंगरपुर में 43 किमी दूर है । बीमार लोगों के लिए

108 और एम्बुलेन्स की सुविधा सूचना देने पर मिल जाती है । कई बार गम्भीर मरीजों को उदयपुर के महाराणा भोपाल चिकित्सालय में रेफर किया जाता है । पालतू जानवरों के इलाज के लिए पशु अस्पताल पुनाली में 8 किमी दूर है । पशु के बीमार होने पर डॉक्टर कों घर ही बुलाया जाता है क्योंकि पशु को ले जाने में खर्चा अधिक आता है ।

पशुपालन संबंधित समस्या

गाँव में गाय, बैल, भैंस व बकरी पालन किया जाता है । पर्याप्त मात्रा में बारिश ना होने के कारण खेतों में पशुओं के प्र्याप्त मात्रा में चारा भी नहीं उगाया जा सकता है। जो भी चारा बारिश के माह में होता है वह केवल चार या पांच माह ही चल पाता है उसके पश्चात खरीद कर लाना पडता है। चारागाह भूमि में चारा काटने के लिए वन विभाग से चालान कटाकर तीन दिन के लिए चारा काटते है लकिन चारागाह भूमि की जमीन कम है इस कारण इस पर भी चारा कम ही उग पाता है । पर्याप्त और पौष्टिक आहार के अभाव में दूधारू पशु दूध भी कम देते है । दूधारू पशु भी अच्छी नस्ल के नही है । चारे की एक पुली या गटठर सात रूपये में खरीदते है । कुछ लोग मांस और अंड़ों के लिए मुर्गीपालन भी करते है ।

कृषि एवं खाद्यान्न की स्थिति

गाँव में कृषि की जमीन उबड़-खाबड़ और पथरीली जमीन भी है, कही कही पर बहुत कम समतल जमीन भी है लेकिन सारे खेत असिंचित है क्योंकि सिंचाई के लिए पानी प्रर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है । गाँव में भू-जल स्तर 250 फुट से भी नीचे चला गया है । उसमे केवल बरसात के मौसम में ही फसल होती है जैसे - मक्का, उड़द, मूंग, और अरहर । जिनके पास बोरवेल की सुविधा है वे लोग खाने के लिए गेहूँ भी उगाते है । कुछ लोगों ने अपने खेतों में महुआ, आम और जलाऊ लकड़ी के लिए पेड़ उगा रखे है । जो उनके व्यक्तिगत काम में आ जाते है । जिनके पास समतल जमीन है वो छह - सात महीने खाने और जिनके पास उबड़-खाबड़, पथरीली जमीन है वो चार-पांच महीने खाने भर का अनाज उगा लेते है । फिर बाजार से या राशन की दुकान से खरीदकर लाना पड़ता है । राशन की दुकान 4 किमी दूर जोगीवाड़ा गाँव में है राशन की दुकान पर "जब तक शौचालय नहीं तब तक राशन नही" का सरकारी फरमान लागू है । राशन की दुकान पर गेहूं के अलावा कुछ नहीं मिलता है । राशन की दुकान पर पॉस मशीन में फिंगरप्रिंट ना आना या इन्टरनेट कनेक्टिविटी की भी समस्या रहती है, केरोसिन मिलना बंद हो गया है, खाना बनाने के लिए सभी को उज्ज्वला गैस का लाभ नहीं मिला है जिन्हें मिला भी है तो उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे दुबारा गैस सिलेन्डर कों रिफिल करवा पाये । सिंचाई के लिए प्रर्याप्त पानी की कमी, भोगोलिक स्थितियों का अनुकूल न होना, भू-जल स्तर लगातार नीचे जाना, उन्नत बीज और उन्नत कृषि तकनीकी ज्ञान की कमी, कृषि विभाग की अनदेखी, रासायनिक खादों का अधिक उपयोग, मिटटी और मौसम के अनुसार खेती नहीं करना इत्यादि कारण भी कृषि उत्पादन को प्रभावित करते है ।
यदि वर्तमान में जो स्थिति बारिश की मात्रा और पानी को ना सहेजने की प्रवृति है वो बनी रही तो गाँव में पीने तथा कृषि के लिए पानी का बड़ा संकट उत्पन्न होने वाला है । खेती में अधिकं रासायनिक खाद का उपयोग और सिचाई के पानी में ज्यादा खारापन होने के कारण जमीन कठोर हो गयी है और उत्पादन घट गया है ।

आजिविका एवं रोजगार के साधनों की कमी

गाँव में रोजगार की स्थिति ख़राब है, रोजगार के नाम पर मनरेगा का काम गाँव में चलता है जिसमे गाँव की 40 प्रतिशत महिलायें जाती है क्योंकि पुरुष बाहर जाकर कड़िया मजदूरी करते है या डूंगरपुर शहर में आते है और गुजरात में अहमदाबाद, मोडासा, हिम्मतनगर जाते है, जहां वे खेतों में तथा फेक्ट्री में काम करते है। कई बार शहर में काम ना मिलने पर खाली हाथ घर जाना पड़ता है । गांव के अधिकतर युवा गुजरात राज्य के अहमदाबाद, हिम्मतनगर, सूरत, मोडासा या महानगर बम्बई में मजदूरी करने के लिये जाते है। अभी मनरेगा में जो मजदूरी दी जा रही है वह भी 100 रूपये तक ही दी जाती है। कुछेक लोगों को काम करने के बाद मस्टरोल के रूपये नहीं मिले है। रोजगार के साधनों के अभाव के पीछे मुख्य कारण अच्छी तकनीकी शिक्षा नहीं मिलना और उन्नत खेती के प्रशिक्षण का अभाव है । रोजगार और आजीविका के साधनों की कमी के कारण गाँव से शहरों की ओर पलायन भी बढ़ रहा है ।

गाँव में उपलब्ध संसाधन, उनकी हालत और संभावनाएं-

संसाधन	हालत	सम्भावना
जल नाला एनिकट कुआं हैण्डपम्प बोरवेल	गाँव का भू-जल स्तर 250 फीट नीचे चला गया है । सभी जल-स्रोतों में गर्मी में पानी कम हो जाता है । गाँव में 4 नाले, 1 जर्जर एनिकट और 9 चालू कुएं है । सिंचाई और पीने के पानी की कमी को पूरा करने के लिए ज्यादा बोरवेल खोद दिए गये है जिससे भूमिगत जल-स्तर नीचे चला गया है और गर्मी बोरवेल में भी पानी बहुत कम हो जाता है । गाँव में एक एनिकट है, जिसमे टूटे होने और दरारे पड़ जाने के कारण पानी रिस कर निकल जाता है। बारिश के बाद पानी तेजी से कम हो जाता है । । सिचाई के लिए पानी बारिश के बाद तीन माह के लिए ही मिल पाता है । पीने के पानी के लिए 11 चालू हैंडपंप पानी उपलब्ध कराते है । एक हैंडपंप पर 9-10 परिवार पानी के लिए आते है । बाकी के लोग पड़ोस के किसी बोरवेल से पानी लेते है । पीने का पानी आयरन और फ्लोराइड युक्त है । चालू कुओं के पानी से सिंचाई	फ्लोराइड मुक्त पेयजल के लिए गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना । नाले की रिन्गवाल की मरम्मत करवाकर गहरी करना । खेतों में पानी के लिए छोटे पक्के गड्डे बनाना ताकि सिंचाई के लिए पानी को रोका जा सके । पानी के ज्यादा भराव वाले स्थानों पर तालाब खुदवाना । एनिकट मरम्मत करना और ऊंचाई बढ़ाना ताकि ज्यादा समय तक पानी रहे तथा सिचाई भी पूरी हो सकती है । गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊंचा किया जा सकता है। बंद पड़े कुँओं और हैंडपंप कों गहरा करवा कर चालू करना । कम फ्लोराइड वाले कुए या हैंडपंप पर आर.ओ. लगवाना

	और मवेशियों के पानी के लिये व्यवस्था की जाती है ।	
जमीन कृषि भूमि बिला नाम भूमि चरागाह पहाड़	गाँव में कृषि जमीन अधिकतर उबड़-खाबड़, पथरीली जमीन है, कुछ जमीन ही समतल है, । कृषि जमीन का पट्टा नहीं मिला है । जंगल और बिलानाम जमीन पर वन विभाग का अधिकार है। पहाड़ियों और जंगल में विलायती बबूल के पेड़ बहुतायत है । चारागाह से थोड़ा बहुत चारा, लकड़ी, ढाक के पत्ते जैसी लघुवन उपज होती है। जिसे गांव के लोग अपने उपयोग में लेते है।	गाँवसभा प्रस्ताव में दर्ज करवाकर केटेगरी-4 में अपना खेत-अपना काम योजना के तहत भूमि समतलीकरण करवाकर उसे अधिक उपजाऊ बनाया जा सकता है। गाँव की जिस जमीन पर खेती नहीं होती है या जंगली घास है उसे साफ करके वृक्षारोपण रोपण करना, लघुवनोपज से आय के साधन बनाए जा सकते हैं। जंगल को कब्जे में लेकर फिर से पुनर्जीवित करते हुए आय के साधन विकसित करना ।
सड़क कच्ची सड़क सी.सी. सड़क पक्की सड़क	समोता का ओड़ा गाँव की पक्की सड़क टूट गयी है । गाँव की सी.सी. सड़के भी टूट गयी है, उनमे खड्डे पड़ गये है और नालियाँ भी टूट गयी है । और कच्ची सड़क भी बहुत सकरी है कच्ची मिट्टी की सड़के है जो बारिश में फिसलन भरी और कीचड़ से लबालब हो जाती है । सड़कों के खस्ताहाल से ज्यादा परेशानी मरीजों और गर्भवती महिलाओ को समय पर सुविधा नहीं मिल पाती है और स्कूल जाने वाले बच्चों को परेशानी होती है । इन पर केवल नीजी वाहन जैसे मोटर साइकिल या पैदल जाया जा सकता है । गाँव के मुख्य सड़क पर एक बस स्टैंड है, बस स्टैंड पर कोई भवन नहीं है । न तो पीने के पानी की व्यवस्था है न ही शौचालय है ।	गाँव के सभी कच्चे रास्ते चौड़े करके सी.सी. सड़क में बदले जाये और टूटी पक्की सड़क, सी.सी. सड़क को पुनः बनाया जाये और अधूरी पड़ी पक्की सड़क के काम को पूरा करवाना तो गाँव के भीतरी इलाके में आवागमन में सुविधा होगी ।
प्राथमिक विद्यालय	गाँव में दोनों विद्यालय भवन कमजोर हो गये है, अध्यापक पूरे नहीं है, कमरों की कमी, कक्षाओ में बैठक व्यवस्था नही है । छत से बारिश में पानी टपकने की समस्या है । शौचालयों में पानी की	स्कूल की मरम्मत और नये कमरे बनवाना । शौचालय की भी मरम्मत करवा कर पानी की व्यवस्था करना । स्कूल में बच्चों के पीने के पानी के लिए आर.ओ. प्लांट लगाया जा सकता है ताकि

	व्यवस्था नहीं है । पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था भी नहीं है । गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव ।	बीमारियों से मुक्त रहे । अध्यापकों को समय पर आने के लिए पाबंद करना ।
सामुदायिक भवन	गाँव का सामुदायिक भवन जर्जर हो गया है । जिस कारण वहाँ कोई मीटिंग या कार्यक्रम नहीं होता है ।	सामुदायिक भवन की मरम्मत करवाना या नया बनवाना ।

गाँव सभा द्वारा चिन्हित मुख्य समस्याएं, उनके कारण, प्रस्तावित समाधान एवं वरीयता

क्र. सं.	**समस्याएं**	**सार्वजनिक/ व्यक्तिगत**	**कारण**	**समाधान**	**तात्कालिक/ दीर्घकालिक**
1	**शिक्षा सम्बंधित समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में दोनों विद्यालय भवन कमजोर हो गये है, अध्यापक पूरे नहीं है, कमरों की कमी, कक्षाओ में बैठक व्यवस्था नही है । छत से बारिश में पानी टपकने की समस्या है । शौचालयों में पानी की व्यवस्था नहीं है । पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था भी नहीं है ।	गाँव सभा में प्रस्ताव लेकर अध्यापकों की नियुक्ति, कमरा निर्माण एवं सुव्यवस्थित बैठक व्यवस्था, शुद्ध पानी की व्यवस्था और नये शौचालय बनवाने हेतु पंचायत और शिक्षा विभाग से ज्ञापन देकर समस्या हल करना	तात्कालिक
2	**पेयजल की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में भू-जल 250 फिट गहराई में चला गया है । गाँव में कुछ कुएं और हैंडपंप सूखे है और जो चालू है उनका पानी फ्लोराइड युक्त है। तालाब में पानी कम रुकने और कुओं में जल स्तर नीचे जाने से पशुओ के लिए भी पानी कम हो जाता है ।	जो हैंडपंप और कुएं बंद हो गये है उन्हें गहरा कर चालू करवाना और गाँव में आर.ओ. प्लांट लगवाना ताकी फ्लोराइड मुक्त पेयजल मिल पाए । गाँव में बरसात के पानी को रोकने के लिए तालाब खुदवाना । एनिकट की मरम्मत कर उसके बांध की ऊंचाई बढ़ाना । ताकि कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊंचा किया जा सकता है। इसके लिए	**दीर्घकालिक**

				गाँव सभा द्वारा बैठक में प्रस्ताव भी लिया गया है ।	
3	**कृषि संबधी समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव की कृषि योग्य उपलब्ध भूमि उबड़ खाबड़ है। सिंचाई के लिए प्रर्याप्त पानी की कमी, भोगोलिक स्थितियों का अनुकूल न होना, भू-जल स्तर लगातार नीचे जाना, उन्नत बीज और उन्नत कृषि तकनीकी ज्ञान की कमी, कृषि विभाग की अनदेखी, रासायनिक खादों का अधिक उपयोग, मिटटी और मौसम के अनुसार खेती नहीं करना इत्यादि कारण भी कृषि उत्पादन को प्रभावित करते है ।	अपना खेत-अपना काम योजना के अंतर्गत उबड़ खाबड़ खेतों को समतल करना, बारिश के पानी को रोकने के लिए खेतों में कच्चे चेकडैम और पक्के टांके का निर्माण। घर के आँगन में पानी को रोकने के लिए टाके (पक्के खड्डे) बनवाना । जैविक खाद का प्रयोग, कृषि विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यशालाये चलाना ।	**तात्कालिक**
4	**रास्ते की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में सड़क व्यवस्था चरमराई हुई है । पक्की और सी.सी. सड़के टूटी हुई है । कच्ची सड़के भी बारिश के समय कीचड़ में हो जाती है । राहगीरों को आने-जाने में समस्या रहती है ।	गाँवसभा बनने के बाद बैठकों में कच्ची सड़क को सी.सी. सड़क में बदलना और जहां जहां रास्ते नहीं है वहां के प्रस्ताव लिए गए हैं । टूटी हुई सड़कों को ठीक करवाने के लिए पंचायत में प्रस्ताव देना ।	**तात्कालिक**
5	**काबिज भूमि पर खातेदारी का हक नहीं मिलना और सामुदायिक भूमि पर**	**सार्वजनिक**	गाँव में लोगों को उनके कब्जे की जमीन का खातेदारी हक नहीं मिला है । वर्तमान में राजस्व विभाग ने खातेदारी हक देना बंद कर दिया है। जिसके कारण भविष्य में सरकारी फरमानों से जमीन जाने का खतरा है	कब्जे की जमीन के लिए व्यक्तिगत दावा और जंगल की जमीन के लिए सामुदायिक दावा करना । कब्जे की जमीन की पैनल्टी कोर्ट में जमा करना और धारा 91 के अनुसार काबिज जमीन	**दीर्घकालिक**

	अधिकार नहीं		। जानकारी के अभाव में गाँव के लोगो ने जंगल, चारागाह व बिलानाम जमीन पर दावा फाइल नहीं लगाई है ।	का नियमन कराना। गाँव सभा द्वारा सबकी फाइल तैयार करके एक साथ राजस्व विभाग में दावे का मुकदमा करना।	
6	**खाद्य सुरक्षा का पूरा लाभ नहीं मिलना**	**सार्वजनिक**	गाँव में राशन की दुकान नही है, इसके लिए 4 किमी दूर जोगीवाडा जाना पड़ता है । वहाँ अक्सर पॉस मशीन में फिंगरप्रिंट न मिलना या इन्टरनेट से कनेक्ट न होने की समस्या आती रहती है । राशन की दुकान पर गेहूं के अलावा कुछ नहीं मिलता है, मिट्टी का तेल बंद करने के साथ अन्य वस्तुएं राशन कार्ड पर मिलती है उन्हें भी बंद कर दिया गया है ।	राशन की दुकान गाँव में लगाई जावे । स्थान ऐसा हो जहाँ इन्टरनेट की समस्या ना आये । जिन लोगों को राशन नहीं मिल रहा है उनके नाम योजना में जुड़वाने के लिए गाँव सभा में प्रस्ताव लेना । राशन सामग्री पूरी और गुणवत्ता वाली दी जाये ।	**तात्कालिक**

संसाधन आंकलन व SWOT विश्लेषण

S- Strengths शक्तियां	**W- Weakness कमजोरी**	**O- Opportunities अवसर**	**T- Threats चुनौतियां**
आवागमन - कच्चे रास्ते, सी.सी. सड़क, पक्की सड़कें	गाँव में पक्की सड़के केवल गाँव में आने-जाने के लिए है । पक्की और सी.सी. सड़के टूटी हुई है । कच्ची सड़के ज्यादा नहीं है ।	रास्ते अच्छे होने से बीमार लोगों को आसानी से समय रहते इलाज मिल सकता है । लोगों को आने जाने में समय की बचत होगी।	गाँव के लोग समस्या को लेकर दबाव नहीं बनाते है कि यह कार्य सरकार व पंचायत का है ।
जल नाला एनिकट कुआं हैंडपंप बोरवेल	गाँव में बारिश के जल संग्रहण के लिए उचित व्यवस्था नहीं है । गाँव में 4 नाले और 1 एनिकट है जो की जर्जर अवस्था में है । इसके	ढलान और पानी के भराव वाली जगह पर तालाब निर्माण, कच्चे और पक्के चेकडेम निर्माण, एनिकट मरम्मत और उसकी ऊंचाई बढ़ाना	पंचायत द्वारा इस चुनौती से निपटने को कोई कार्य योजना नहीं होना। गाँव के लोगों की उदासीनता।

	अलावा 9 चालू कुएं और 11 चालू हैंडपंप है जो पानी उपलब्ध कराते है । गर्मी में पानी सूख जाने से संकट हो जाता है । कुओं को रिचार्ज करने की व्यवस्था नहीं करना । जल संरक्षण के बारे में गाँव वालों में जागरूकता न होना । सरकारी योजना और मौसम पर अधिक निर्भर रहना ।	। घरों में पानी को रोकने के लिए पक्की टंकी का निर्माण करवाना, जिससे अशुद्ध पीने के पानी की समस्या को दूर किया जा सकता है । भू-जल को सही तरीके से संरक्षित उपयोग करना ताकी जल स्तर एकदम से नीचे न जाये । बोरवेल से आवश्यकता होने पर ही पानी निकालना ।	
रोजगार के साधन	गाँव में रोजगार के साधन खेती या नरेगा है । कृषि उत्पादन की कमी । अच्छी नस्ल के पशुओं का अभाव । अच्छी तकनीकी प्रशिक्षण नहीं मिलना ।	गाँव में खाली पड़ी जमीन और पहाड़ियों पर वृक्षारोपण, अच्छी नस्ल के पशुओं का पालन, सब्जी के खेती से आय के स्रोत बढ़ाये जा सकते हैं।	गाँव के लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन का अभाव। उन्नतशील बीज का अभाव । जमीन के बेहतर प्रबंधन की कमी।
जमीन	सभी लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन नहीं होना। जमीन के पट्टे ना होना । भू-जल स्तर लगातार नीचे जाना, उन्नत बीज और उन्नत कृषि तकनीकी ज्ञान की कमी, कृषि विभाग की अनदेखी, रासायनिक खादों का अधिक उपयोग, मिटटी और मौसम के अनुसार खेती नहीं करना इत्यादि कारण भी कृषि उत्पादन	खेती की जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाना। गाँव की सार्वजनिक खाली पड़ी जमीन पर फलदार वृक्षारोपण करवाना।	सभी लोगों के पास पर्याप्त जमीन का अभाव। खाली पड़ी जमीन के बेहतर उपयोग की योजना का अभाव। बेहतर कृषि तकनीक का प्रयोग करना ।

	को प्रभावित करते है ।		

- **नजरिया नक्शा**

- **गाँवसभा द्वारा तैयार गाँव विकास योजना में प्रस्तावित कार्यो का विवरण -**

प्रस्तावित कार्य	संख्या
पेंशन के सम्बन्ध में	
विधवा पेंशन	1
पालनहार (6-18 वर्ष)	4
पी.एम., सी.एम. आवास योजना नए निर्माण	28
बकाया राशि भुगतान के सम्बन्ध में	3
शौचालय की बकाया राशि भुगतान के सम्बन्ध में	7
विद्यालय के सम्बन्ध में (2 अध्यापक नियुक्ति, 3 कमरा निर्माण, छत मरम्मत, खेल मैदान परकोटा, शौचालय में पानी की व्यवस्था, आर.ओ. प्लांट, फर्निचर और खेल सामग्री, स्कूल के आगे से ट्रांसफार्मर हटाना)	1
आंगनवाड़ी निर्माण के सम्बन्ध में	2
सामुदायिक भवन निर्माण के सम्बन्ध में	1
राशन की दुकान निर्माण निर्माण के सम्बन्ध में	1
<u>केटेगरी 4 के कार्य</u> खेत समतलीकरण, मेड़बंदी, रिंगवाल, कुआं गहरीकरण और मरम्मत एवं पशुवाडा निर्माण	42
सीसी सड़क निर्माण के सम्बन्ध में	4
हैंडपंप मरम्मत के सम्बन्ध में	7
हैंडपंप नये खुदवाने के सम्बन्ध में	6
पक्के चेकडैम निर्माण के सम्बन्ध में	27
पक्के एनिकट निर्माण के सम्बन्ध में	5
सार्वजनिक कुआं गहरीकरण के सम्बन्ध में	4
बड़े नाले पर रिंगवाल बनाने के सम्बन्ध में	2
आर.ओ. प्लांट लगाने के सम्बन्ध में (प्रा. वि. के पास)	1
शमशान घाट निर्माण के सम्बन्ध में (स्नानघर, टिन-शेड, चबूतरा)	1
आपसी विवाद निपटारा के सम्बन्ध में	
सामाजिक बुराईयों पर रोक लगाने के सम्बन्ध में	
सामुदायिक दावा पेश करने के सम्बन्ध में	
काबिज भूमि पर व्यक्तिगत दावा पेश करने के सम्बन्ध में	

गाँव विकास नियोजन प्रक्रिया -

सेवा में,

श्रीमान सरपंच/सचिव महोदय,
ग्राम पंचायत ...कोलखण्डा खास...

विषय :- गाँव के सामाजिक व आर्थिक विकास के कार्यक्रमों आदि का क्रियान्वयन के पूर्व अनुमोदन के सम्बन्ध में।

महोदय,

हम आपका ध्यान पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों पर विस्तार) अधिनियम 1999 की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, इस अधिनियम के तहत संविधान में पंचायत व्यवस्था के भाग 9 के प्रावधानों के अनुसूचित क्षेत्रों पर जरूरी फेरबदल के साथ लागु किया है।

हम लोगों ने अपने इस रहवास को औपचारिक तौर पर गाँव के रूप में स्वीकार किया है और पंचायत उपबंध अधिनियम 1999 की धारा 3(क) के तहत ग्राम सभा का गठन किया है। इसके अनुसार धारा 3(ग)(I) के तहत ग्राम पंचायत किसी भी विकास के कार्यक्रम के प्रस्ताव या उसके क्रियान्वयन के पूर्व गाँव की ग्राम सभा से अनुमोदन करना आवश्यक है। हमने हमारी ग्राम सभा द्वारा निम्न प्रस्ताव (सुची संलग्न है) पारित कर आपके पास भिजवाये जा रहे है जिसको आप ग्राम पंचायत के रजिस्टर में पंजियन कर अग्रिम कार्यवाही करते हुए कार्य प्रारम्भ करावें।

भवदीय
ग्राम सभा सदस्यगण
ग्राम ...समोता का ओडा...

प्रतिलिपि :-

1. श्रीमान विकास अधिकारी ....
2. श्रीमान जिला कलेक्टर महोदय ....
3. श्रीमान मुख्य कार्यकारी अधिकारी ....
4. निजी रिकॉर्ड

सोहनलाल

ग्राम सेवक एवं पदेन सचिव
ग्रा.पं. कोलखण्डा खास
पं.स. दोवड़ा जि. डूंगरपुर

सचिव

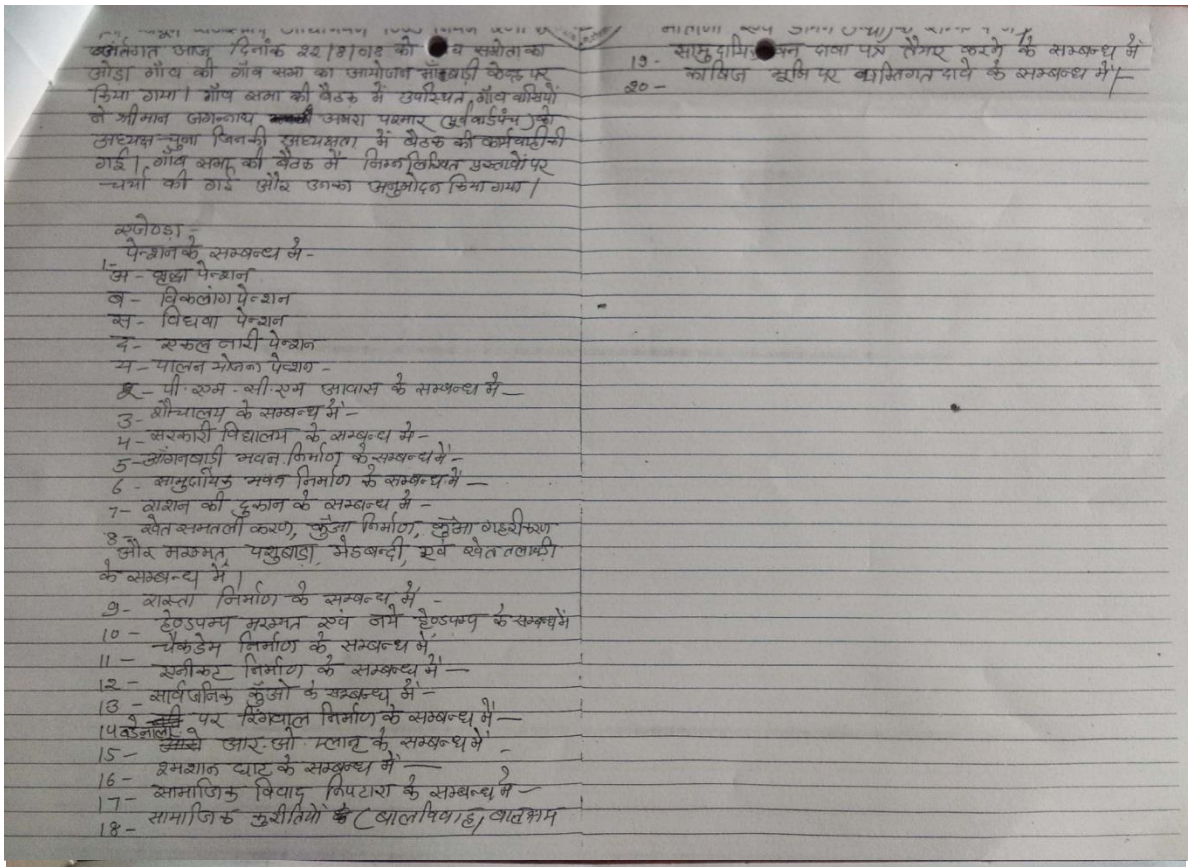

अंतर्गत आज दिनांक 22/9/22 को [illegible] समीता का ओड़ा गाँव की गाँव सभा का आयोजन आंगनबाड़ी केन्द्र पर किया गया। गाँव सभा की बैठक में उपस्थित गाँव वासियों ने श्रीमान जगन्नाथ अमरा परमार (पूर्व वार्डपंच) को अध्यक्ष चुना जिनकी अध्यक्षता में बैठक की कार्यवाही की गई। गाँव सभा की बैठक में निम्नलिखित प्रस्तावों पर चर्चा की गई और उनका अनुमोदन किया गया।

एजेण्डा -
पेन्शन के सम्बन्ध मे -
1- अ - वृद्धा पेन्शन
ब - विकलांग पेन्शन
स - विधवा पेन्शन
द - एकल नारी पेन्शन
य - पालन मोजना पेन्शन -
2 - पी.एम - सी.एम आवास के सम्बन्ध मे -
3 - शौचालय के सम्बन्ध में -
4 - सरकारी विद्यालय के सम्बन्ध मे -
5 - आंगनबाड़ी भवन निर्माण के सम्बन्ध में -
6 - सामुदायिक भवन निर्माण के सम्बन्ध में -
7 - राशन की दुकान के सम्बन्ध मे -
8 - खेत समतली करण, कुआँ निर्माण, कुआ गहरीकरण और मरम्मत, पशुबाड़ा, मेडबन्दी, एवं खेत तलाई के सम्बन्ध में।
9 - रास्ता निर्माण के सम्बन्ध में -
10 - हेण्डपम्प मरम्मत एवं नये हेण्डपम्प के सम्बन्ध में
11 - चैकडेम निर्माण के सम्बन्ध में
12 - एनीकट निर्माण के सम्बन्ध में -
13 - सार्वजनिक कुँओ के सम्बन्ध में -
14 - वडनाला पर रिंगवाल निर्माण के सम्बन्ध में -
15 - आर.ओ. प्लान्ट के सम्बन्ध में -
16 - श्मशान घाट के सम्बन्ध में -
17 - सामाजिक विवाद निपटारा के सम्बन्ध मे -
18 - सामाजिक कुरीतियों (बालविवाह, बालश्रम
19 - सामुदायिक वन दावा पत्र तैयार करने के सम्बन्ध में
20 - काबिज भूमि पर व्यक्तिगत दावे के सम्बन्ध में।

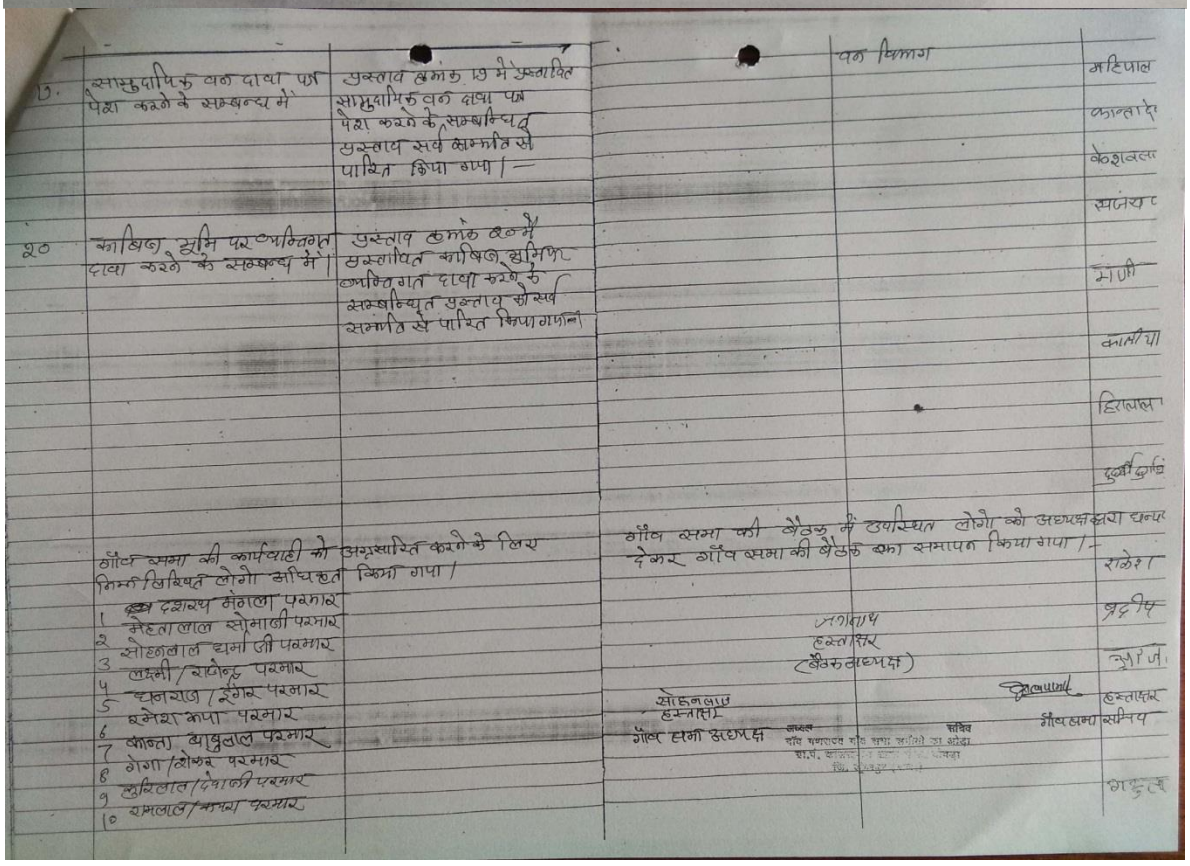

19.	सामुदायिक वन दावा पत्र पेश करने के सम्बन्ध में	प्रस्ताव क्रमांक 19 मे प्रस्तावित सामुदायिक वन दावा पत्र पेश करने के सम्बन्धित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया गया।	वन विभाग	महिपाल
				कान्तादे
				केशवला
				सजय
20	काबिज भूमि पर व्यक्तिगत दावा करने के सम्बन्ध में।	प्रस्ताव क्रमांक 20 में प्रस्तावित काबिज भूमि पर व्यक्तिगत दावा करने के सम्बन्धित प्रस्ताव को सर्व सम्मति से पारित किया गया।		मणी
				कालीया
				हिरालाल
				दुर्गा

गाँव सभा की कार्यवाही को अग्रसारित करने के लिए निम्नलिखित लोगो अधिकृत किया गया।
दशरथ मंगला परमार
1 मेहतालाल सोमाजी परमार
2 सोहनलाल धर्मा जी परमार
3 लक्ष्मी / राजेन्द्र परमार
4 धनराज / ईगर परमार
5 रमेश रूपा परमार
6 कान्ता बाबुलाल परमार
7 गेगा / शंकर परमार
8 कुरिलाल / देवाजी परमार
9 रमलाल / [illegible] परमार
10

गाँव सभा की बैठक में उपस्थित लोगो को अध्यक्ष द्वारा धन्यवाद देकर गाँव सभा की बैठक का समापन किया गया।

राकेश
प्रदीप
[illegible]

जगन्नाथ
हस्ताक्षर
(बैठक अध्यक्ष)

सोहनलाल
हस्ताक्षर
गाँव सभा अध्यक्ष

अध्यक्ष / सचिव
गाँव गणराज्य गाँव सभा समीती का ओड़ा
[illegible]

[illegible]
हस्ताक्षर
गाँव सभा सचिव

गङ्गला

विलेज प्लानिंग फेसिलिटेटर टीम (वीपीएफटी)

1.	कुरीलाल परमार	7568768356
2.	सोहनलाल परमार	9660585510
3.	ललित परमार	9636268138
4.	लक्ष्मण	7073512187
5.	प्रवीन परमार	8890908737